मैथिली प्रतिष्ठा
स्नातक प्रथम खण्ड
पृथ्वीपुत्र उपन्यासकेँ कथानक वर्णन

बसंत कुमार
अतिथि शिक्षक

Date 01/04/2020

कथानक - कथानक उपन्यासक प्राण थिक। उपन्यासक विभिन्न तत्वमे कथावस्तुक स्थान सर्वोपरि अछि। एकरा उपन्यासक रीढ़ कहि सकैत छी।

श्रीललितक पृथ्वीपुत्र उपन्यासमे बदलैत सामाजिक स्थितिक चित्रण अछि जाहिमे निम्नवर्गीय जीवनक परिवर्तित रूपक विश्लेषण भेल अछि। सामाजिक बन्धनक शिथिलताक चित्रण कए उपन्यासकार एकगोट नव अध्यायक श्रीगणेश करैत छथि। बिसेखी, सरूपा, गेना आदि एहि उपन्यासक विभिन्न पात्र अपन अधिकार बुझैत अछि। हिनका लोकनिकेँ अपन खेतक प्रति ममता छैक। एहि उपन्यासक एक महत्वपूर्ण पात्र 'बिजली' कलपू मिसरक संग प्रेमालापक हेतु सासुरसँ बारम्बार भागि जाइत अछि।

बिजलीक सासुरसँ भागि जाएब आओर हीरालालक (बिजलीक पति) पंचैती बैसाएब मिथिलाक निम्नवर्गीय सामाजिक जीवनक सत्य घटना थिक। बिजलीक बारम्बार सासुरसँ भागि जाएब ओकर पिता बिसेखीक लेल समस्या बनि जाइत अछि। प्रस्तुत प्रसंगमे बिसेखीक प्रतिक्रियाक निम्नांकित चित्र द्रष्टव्य थिक।

" बिसेखी अथ-उथमे पड़ल रहए। एक बेर बेटी दिश ताकए। एक बेर दलान पर बैसल क्रोधान्ध जमाय दिश। किछु ने फुरइ। की करओ कोनो माल जाल त' छल नै जे रस्सी हीरालालक हाथमे धरा दैतइ आ सेहो माल-जाल कउखन देह नड़ा दइ छइ। धसकि जाइ छइ।

टारने ने टराइ छैँ। तखन ई त' बोधगर मनुखक गप्प।"

जमींदारी उन्मूलनक बाद किसान मध्य एक नवीन भावना जागृत भेल। किसान जाहि जमीनकेँ जमींदारक बुझैत छल ओकरा आब अपन बुझए लागल। बिसेखी आर सेना अपन जमीन लेल प्राण त्यागपर उतारु भ' जाइत छथि।

अपन अधिकार एवं मर्यादाक पालनमे बिसेखी आ सरुप पूर्ण सतर्क अछि। ओकरा बुझल छैक निरअपराधकेँ पुलिस किछु नहि बिगाड़ि सकैत छैक। ओ अपन बेइज्जती नहि सहि सकैछ ओकरा मर्यादापूर्वक जीबाक अधिकार छैक। एहि परिस्थितिमे कथानकक विकास देखाओल गेल अछि।

एहि प्रकारेँ पृथ्वीपुत्रक कथानकक बंधन कतहु शिथिल नहि भेल अछि। एकर चित्रणमे स्वाभाविकता एवं घटनाक वर्णनमे प्रवाह छैक। अनुकूल वातावरणक पृष्ठभूमिमे घटनाक निर्माण कथावस्तुकेँ विश्वसनीय एवं प्रभावोत्पादक बना दैत अछि।

सोझामे पनपिआइक चँगेरी बेनी राखि देलकइ। मकइक सोन्हगर मोट रोटी, चारि फक्का कौँच पिआजु, एक फाँक आमक अँचार आ कनेक नोन। हरिअर मेरचाइ नहि सहय होइक सरुपकेँ। रोटीक एकटा पैघ टुकड़ी तोड़ि अँचारक मसाला मखा मुँहमे धएलक। बड़ी काल धरि अँचार ओ पिआजुक झाँसमे रोटी चिबबैत रहल। मुँहक कुकजोर थोड़ि पानि पीबए लागल।

मुँहमे लोटा लगओने मुसकी मारि भाउज दिश तकलक सरुप। फेर लोटा राखि दोसर कओर खाए लागल।